बिरहोर जनजाति में नहीं है स्त्री-पुरुष का भेद

अध्ययन : सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड के स्टूडेंट्स मैकलुस्कीगंज में कर रहे हैं स्टडी, मई में आएगी फाइनल रिपोर्ट

भास्कर संवाददाता | रांची/खलारी

आदिम जनजाति बिरहोर भले विलुप्ति के कगार पर है, लेकिन इस समाज में परंपराएं अब भी कायम हैं। जिनमें अहम है, स्त्री-पुरुष की हर काम और निर्णय में बराबर की भागीदारी। इनमें कोई बड़ा-छोटा नहीं। जबकि आमतौर पर शहरी समाज पुरुष वर्चस्ववादी है। बिरहोर कभी आपस में लड़ाई-झगड़ा नहीं करते हैं। इनका मातृभूमि प्रेम भी सबसे जुदा है। रोजी-रोटी की तलाश में जहां भी जाते हैं, उस धरती को अपना मान लेते हैं।

ये बातें बिरहोर पर किए जा रहे एक अध्ययन से सामने आई हैं। सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड (सीयूजे) के स्टूडेंट्स मैकलुस्कीगंज में रहकर उनपर अध्ययन कर रहे हैं। इनमें थर्ड इयर के छठे समेस्टर के 12 छात्र-छात्राएं शामिल हैं। नेतृत्व प्रो. तुलसीदास मांझी कर रहे हैं।

दल के सदस्य 14 अप्रैल से मैकलुस्कीगंज स्थित जागृति विहार में रह कर महुआटांड़ के बिरहोरों पर अध्ययन कर रहे हैं। अध्ययन एक मई तक चलेगा। प्रो. तुलसीदास ने बताया कि बिरहोर में सामूहिकता की भावना है। वे बाजार-हाट से लेकर नशे का सेवन भी अकेले करने नहीं जाते हैं।

बिरहोर परिवार के साथ केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों का दल।

मुखिया से मिले स्टूडेंट्स

दल बुधवार को लपरा पंचायत की मुखिया पुतुल देवी से मिला। उनसे समाज में महिलाओं की भागीदारी, पंचायत की समस्या, ग्राम सभा, पंचायत चुनाव, विकास योजना, प्रतिनिधित्व आदि की जानकारी ली।

दुष्कर्म की सजा मौत

अध्ययन में चौंकाने वाली बात यह मिली है कि यदि उनकी बेटी के साथ दूसरे समुदाय का व्यक्ति दुष्कर्म करता है, तो बिरहोर उसकी हत्या कर देता है। यदि दुष्कर्मी पकड़ में नहीं आया तो उसकी जगह एक खस्सी को मार कर फेंक देते हैं। मणिपुर के छात्र फिलियो पामई बिरहोर जाति के परिवारों की एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी बना रहे हैं। प्रो. तुलसीदास ने बताया कि छात्रों के इस अध्ययन रिपोर्ट और डॉक्यूमेंट्री से इस जाति के बारे में कई नई जानकारी मिलेगी।

दो टीमों में 12 स्टूडेंट्स

दल दो टीमों में बंटकर बिरहोर के भाषा-साहित्य, संस्कृति, आर्थिक व्यवस्था, खानपान, जीवन शैली, गीत-संगीत, शिक्षा, स्वास्थ्य, त्योहार, विवाह का पता लगा रहा है। टीम में जेनिफर केरकेट्टा व फिलियो पामई मणिपुर, अंकित चौधरी, अंजु कुमारी, पायल रानी सिंह व रोहित कुमार (सभी रांची), जरमीना नैंसी तिर्की जमशेदपुर, मोपना रॉय यूपी, सुरभि मिश्रा पटना, अमृता सिंह गढ़वा रोड, दीपा सिंह बोकारो और प्रिया सिंह सिंगरौली (एमपी) शामिल हैं।

शोध सेंट्रल यूनिवर्सिटी के छात्रों ने बिरहोरों पर किया शोध, कई चौंकाने वाली बातें सामने आयी

देश-दुनिया से कटे बिरहोर आज भी संस्कृति नहीं छोड़ते

गोपी चौरसिया

मैकलुस्कीगंज। झारखंड के बिरहोर जिसके बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि ये लोग एक जगह टिक कर नहीं रहते। आज यहां तो कल वहां, इनकी जिंदगी होती है। लेकिन जब गहराई से उसके ऊपर अध्ययन किया गया, तो कई चौकाने वाली बातें सामने आयी हैं। रांची के ब्रांबे में अवस्थित सेंट्रल यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं का 12 सदस्यीय ने एक दल ने प्रोफेसर तुलसी दास मांझी के नेतृत्व में मैकलुस्कीगंज स्थित महुआटांड में रहे बिरहोर इलाकों का दौरा किया। उनकी संस्कृति, भाषा, आर्थिक व्यवस्था, खान पान, पर जब शोध किया, तो कई चौकाने वाली बातें सामने आयी है। बिरहोर भारतीय संविधान को नहीं जानते हैं। थाना पुलिस उनके समझ से बाहर है। उनके समुदाय की किसी युवती के साथ अगर किसी ने दुष्कर्म किया, तो पकड़े जाने पर उसकी खैर नहीं। जान से मार देते हैं समुदाय के लोग। उनकी क्रूरता यहीं समाप्त नहीं होती, अगर अपराधी पकड़ा नहीं गया, तो उसके नाम पर एक बकरा खरीद कर लाते हैं और उसे बड़ी बेरहमी से मारते हैं और फेक देते हैं।

शोध कार्यक्रम में शामिल दल।

शोध कर रहे लोगों का यह भी मानना है कि इस आधुनिक परिवेश में भी वे अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपरा को जीवित रखे हुए हैं। सरकार चाहे जितनी भी सुविधा मुहैया करा दे, वे अपनी झोपडियों से विमुख नहीं होते। जंगलों में जाना और आखेट करना, उसे बाजार में बेचना उनका प्रमुख पेशा है। शोध में सबसे अहम जानकारी यह मिलती है कि इसे विलुप्त प्रजाति में आज भी स्त्री-पुरुष में अंतर नहीं है। पुरुष स्त्रियों का आदर करते हैं। बहु विवाह की प्रथा इनमें नहीं है। अंतरजातीय विवाह की प्रथा भी इस समुदाय में नहीं है। यहां वहां ये कहीं भी रहें ये विशेष अवसरों पर अपने पुराने निवास को कतई नहीं भूलते, शादी-विवाह ये अपने घर से ही करते हैं।

शोधकर्ता दल का कहना है कि मैकलुस्कीगंज में रह रहे बिरहोरों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। सिर्फ एक कमी है कि उन्हें चिकित्सा का लाभ सही ढंग से नहीं मिल रहा है। इस शोध कार्यक्रम का प्रारूप सीआइसी एस केंद्र की अधीक्षक सुचिता सेन चौधरी ने तैयार की। जबकि इस देशज संस्कृति अध्ययन में प्रिया सिंह, नैंसी तिर्की, अंकित चौधरी, अंजु गुप्ता, रोहित कुमार, जैनिफर, अमृता सिंह, सुरभि, दीपा सिंह, फिलियोपामी, पायल, मोरपना राय शामिल है। ये सभी छात्र-छात्राएं मैकलुस्कीगंज के जागृति बिहार में पिछले 15 अप्रैल से रह रहे हैं। 1 मई को इनका कार्यक्रम समाप्त होगा। मैकलुस्कीगंज के सुशील तिवारी इनके कार्यक्रम को सफल बनाने में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं।

HH 24/04/2014

बिरहोरों का अध्ययन करने मैक्लुस्कीगंज पहुंचे सीयूजे के छात्र

शोध करने मैक्लुस्कीगंज पहुंची सीयूजे की टीम। • हिन्दुस्तान

मैक्लुस्कीगंज/मांडर | प्रतिनिधि

केन्द्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के 12 छात्रों का दल प्रो तुलसी दास मांझी के नेतृत्व में मैक्लुस्कीगंज के बिरहोरों पर शोध करने आया है। उन्होंने बताया कि ये छात्र देशज संस्कृति अध्ययन के तहत बिरहोरों पर शोध कर रहे हैं। शोध के दौरान बिरहोरों की संस्कृति, उनके सामाजिक रहन सहन, आर्थिक स्थिति, खान पान, परंपरा के संबंध में जानकारी लिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि समाज किसी भी मामले को लेकर समझौता नहीं करता है। इस दल में प्रिया सिंह, नैन्सी तिर्की, अंकित चौधरी, अंजू गुप्ता, रोहित कुमार, जेनिफर, अमृता सिंह, सुरभि, दीपा सिंह, पायल, फिलियो पेमी, मोपर्णा रॉय आदि शामिल हैं।

उधर सीयूजे में चुने गये पंचायत प्रतिनिधियों को लेकर तीनदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसका आयोजन यूनिसेफ, पंचायती विभाग झारखंड सरकार और सीयूजे के सेन्टर फोर पीआरआई वूमैन एण्ड चाईल्ड डेवेलोपमेन्ट स्टडीज की ओर से किया जा रहा है। मंगलवार को कार्यक्रम में मांडर के 55 पंचायत प्रतिनिधि तथा बुधवार को बुढ़मू प्रखंड के कुल 35 पंचायत प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिनिधियों को महिलाओं के अधिकार, शिक्षा का अधिकार, बच्चों के अधिकार, राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। वहीं गुरूवार को कांके ब्लॉक के चुने हुए प्रतिनिधि शामिल होगें। इन लोगों को विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ अशोक कुमार, डॉ विष्णु राजगड़िया, सीटीआई के अजय कुमार सिंह प्रशिक्षण दे रहे हैं। मंच संचालन मीना कुमारी ने किया। मौके पर प्रो ज्योति बरूआ, शमशेर आलम सहित अन्य उपस्थित थे।